International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रेम के सिद्ध कवि सर्वेश्वर

डा.हिमांशु प्रियदर्शी
एस0आर0के0जे0 हाई स्कूल कुशहर

सारांश

प्रेम संबंध मानवीय मूल–वृत्ति है, अतः प्रेम के विषय में विवेचन का उपक्रम हमें सर्वप्रथम दर्शन, धर्म और साहित्य में मिलता है। प्रेम प्राणियों की जीवनी शक्ति है। यह दो ह्रदय का निर्विकार मिलन भी है और विश्वबंधुत्व की मूल प्रेरणा भी। प्रेम का सम्बन्ध शरीर से कहीं अधिक मन से है। अतः प्रेम के विवेचन के संदर्भ में मनोविज्ञान का महत्त्व स्वतः सिद्ध है। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि अपने से प्रेम करना वस्तुतः अपने जैसे मानव–मात्र से प्रेम करना ही है। साहित्य में व्यक्त रचनाकार के उद्‌गार अधिकांश में इसी कोटि के हैं।

प्रेम मनुष्य होने की पहली शर्त है। यह जीवन और जगत का मूल तत्व है। प्रेम के बिना न व्यक्ति सह्रदय हो सकता है और न ही सामाजिक संरचना ही संभव हो सकती है। प्रेम केवल एक कवि की कोरी कल्पना नहीं है। अपितु प्रेम एक भावानुभूति है जो जीवन और काव्य (साहित्य) दोनों में पायी जाती है। प्रेम एक ऐसा अज्ञात बंधन है, जो सभी ज्ञात बंधनों से मुक्ति के पथ की ओर अग्रसर करता है। युग परिवर्तन के साथ ही साथ प्रेम का रूप भी व्यापक हुआ है। नयी कविता में प्रेम रोजमर्रा की जिन्दगी में अपने परिवेश और अपनी भावनाओं को साथ लेकर जीने का एक संकलित माध्यम है। सर्वेश्वर की कविताओं में प्रेम इसी रूप में उद्‌घाटित हुआ है। प्रेम स्वयं में उदात्त होता है। सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की कविताओं में वर्णित प्रेम का रूप व्यापक और विराट है।

विशिष्ट शब्द :–निर्विकार, विश्वबंधुत्व, उद्‌गार, रोजमर्रा ।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भूमिका :– प्रेम मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है और मानवीय संवेदना का सर्वाधिक परिष्कृत रूप। यह जीवन का मूल है और मनुष्यता का प्राण–तत्त्व। सर्वेश्वर ने प्रेम विषय के अनेक कविताएँ लिखीं। इनमें तुम कहो, विगत प्यार, प्रेम –नदी के तीरा, अब नदियाँ नहीं सूखेगी, मुझे स्वीकार नहीं, प्यार : एक छाता, यह इमारत प्यार की, हम–तुम और चलो घूम आयें आदि प्रमुख हैं। उनकी प्रेम कविताओं में तन और मन की ताजगी और बहार विद्यमान है। प्रेम जब समष्टिमूलक होता है, तो पूरा ब्रह्मण्ड उसमें समाहित हो जाता है और जब वह व्यष्टिमूलक होता है तो व्यक्ति विशेष के प्रति रागात्व का संगीत बन जाता है। सर्वेश्वर नयी कविता की सम्पूर्ण प्रवृत्तियों को उद्घाटित करने वाले सिद्ध कवि हैं। उनकी कविताओं में प्रेम की कई भंगिमाएँ हैं, कई स्वर हैं। उनमें लोकगीत की मस्तीभरी धुन पर सहज प्रेम के गीत गाने की जितनी सामर्थ्य है, उतनी ही विरह की गहन व्यथा को अद्भुत संयम के साथ कविता में उतारने की क्षमता भी। वे प्रकृति को खिलवाड़ की मनःस्थिति में भी चित्रित कर सकते हैं और गहनतम अनुभूतियों के रंग में रंगकर भी। जीवन में हर कहीं रम लेने की और कहीं से कविता बोलने की सर्वेश्वर जी में अदभूत–सी ताकत है। उन्होंने प्रकृति एवं नारी की रागात्मकता में डूबकर कविताओं की रचना की है, किन्तु उनमें भावप्रवणता के स्थान पर बौद्धिक संयम अधिक है। उनमें सपाटबयानी तथा नवीन बिम्ब–विसर्जन की अपार क्षमता है।

नयी कविता में वर्जनाओं से मुक्ति का आह्वान है। नयी कविता के पूर्व युग वर्जनाओं से युक्त थे क्योंकि द्विवेदी युग में कवि अपने प्रेम की अभिव्यक्ति अपनी भावनाओं के अनुरूप नहीं कर पा रहे थे। छायावादी युग में वैयक्तिकता तो थी किन्तु कवि का मन सामाजिक वर्जनाओं से घिरा था। लेकिन नये कवि इस मायाजाल से बाहर आकर पूरे साहस से कटु सत्य को कहते हैं क्योंकि वे जान चुके हैं कि सत्य का उद्घोष बड़े साहस का काम है। इसलिए वह साहस के साथ युगीन यथार्थ की अभिव्यक्ति करते हैं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध आलेख विश्लेषणात्मक एवं वर्णानात्मक प्रकृति का है । शोध कार्य के लिए द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है । इसके लिए मुख्यतः प्रकाशित ग्रंथ एवं आलोचनात्मक पुस्तकों को अध्ययन का आधार बनाया गया है ।

तथ्य विश्लेषण

सर्वेश्वर समकालीन सत्य और यथार्थ को सशक्त हाथों से पकड़ सके हैं । जहाँ छायावादी कवि मौन दृष्टि की भाषा को ही स्वीकार कर रह जाता है, वहीं सर्वेश्वर देह के संगीत को बजाकर महसूस करना चाहते हैं, उसे सुनना चाहते हैं। दोनों के उदाहरण द्रष्टव्य हैं–

मैं न कभी कुछ कहता,
बस, तुम्हें देखता रहता।
चकित, थकी, चितवन मेरी रह जाती
दग्ध हृदय के अगनित व्याकुल भाव
मौन दृष्टि की ही भाषा कह जाती।[1] (निराला)

मुझे चूमो
जल भरा मेघ बना दो
शीतल पवन बना दो
फिर मेरे अनन्त नील को
इन्द्रधनुष–सा लपेटकर
मुझमें विलय हो जाओं।[2] (सर्वेश्वर)

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

स्पष्ट है कि छायावाद की भावभूमि जहाँ संकोच और शील के आवरण में आधुनिक होने से वंचित रही। वही नयी कविता छायावादी कल्पना जगत से निकलकर विवेक के ठोस धरातल पर खड़ी होकर सोचने के लिए विवश हुई। नयी कविता की विशेषता का उल्लेख करते हुए लक्ष्मीकान्त वर्मा लिखते हैं– ''नया भावबोध किसी विशेष मनोग्रन्थि या रीतिवाद को नहीं मानता तथा किसी भी मर्यादित सत्य को कहने मे पाप नहीं समझता। पाप की परम्परागत परिभाषा के पीछे जो संस्कार जो परम्पराएँ रूढ़ियाँ, जो वर्ग चेतनाएँ लदी हैं, नया कवि उसके कृत्रिम रूप को स्वीकार नहीं करता। अनुभूति की ईमानदारी मूल्यों की मर्यादा को निखारती है। किसी भी रचना के लिए अनुभूति की गहराई ओर इमानदारी अपेक्षित है न कि आवरण की झूठी मर्यादा और उसकी संकीर्णता।''[3]

नयी कविता का परिवेश समस्याओं से घिरा था और समस्याएँ भावना से नहीं सुलझ सकती थीं। अतः उन समस्याओं से जूझने के लिए बुद्धि का सहारा लेना पड़ा और तब उसका जीवन–दर्शन दिनानुदिन चिन्तन प्रधान होता गया। क्योंकि ''नयी कविता व्यक्ति के उस रूप की कविता है जिसका सम्बन्ध परीलोक से न होकर अकृत्रिमता और वास्तविकता से है। वह ऐसे सौन्दर्यबोध का सृजन करती है जिसमें भाषिक सत्ता के साथ बौद्धिक एवं विचारात्मक संवेगों का भी सन्तुलित समावेश होता है।''[4]

नयी कविता में बुद्धिमूलक यथार्थवादी दृष्टि तो हैं ही साथ ही उसमें अनुभूति की सच्चाई भी है। वह अनुभूति एक क्षण की हो या एक समूचे काल की, किसी सामान्य व्यक्ति की हो, या विशिष्ट पुरुष की, आशा की हो या निराशा की। यही अनुभूति कवि की सबसे बड़ी सफलता है। इसको रेखांकित करते हुए डॉ0 रामवचन राय लिखते हैं – ''ईमानदारी बौद्धिक चेतना का वह स्तर है, जिस पर वस्तुओं की वास्तविकता का सही अनुभव होता है वैसे यह एक साहित्येतर नैतिक मूल्य है, फिर भी इसके आधार पर साहित्य का मूल्यांकन प्रासंगिक नहीं कहा जा सकता क्योंकि अन्ततः काव्य कृति भी मानव कृति है और किसी–न–किसी मानव–मूल्य को व्यक्त करती है।''[5]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

यह ईमानदारी सर्वेश्वर में निरन्तर दिखाई देती है। चाहे प्रकृति–चित्रण हो या वैयक्तिक कविताएँ अथवा निराशा अवसाद की भावनाएँ या फिर सामाजिक उत्पीड़न एवं अव्यवस्था। सर्वेश्वर का साहस और विद्रोह किसी–न–किसी रूप में हर जगह परिलक्षित होता है।

कवि सर्वेश्वर प्रेम नदी के तीर बैठकर जिन्दगी का मधुर गीत–गाना चाहते हैं साथ ही कवि को प्रिये के रूप की धूप सेंकने से भी कोई परहेज नहीं। उनका काव्य मेघ और बसन्त की बौरों से भी सजा है किन्तु कवि का वास्तविक रूप यहाँ अँटता नहीं है। उनका रूप तो उस विराटता में बिखरा है जहाँ साामाजिक विषमताओं, रूढ़ियों और धर्माडम्बरों पर करारी चोट करती होती है। निजी जीवन के संघर्ष और परिवेशगत सच्चाईयों ने मिलकर सर्वेश्वर की आधुनिक दृष्टि को और पैना बनाया है। कवि स्वयं कहते हैं कि ''कविता मुझे अकेले में साहस देती है उसी के सहारे मैं जीता हूँ। उसे बिना रचे तो मैं रह ही नहीं सकता। मैं अपने अनुभव, अपने परिवेश तथा उसकी काव्यगत अभिव्यक्ति को नये ढंग से रचने को आमदा हुआ हूँ। 'अब मैं कवि नहीं रहा/एक काला झंडा हूँ/जो विरोध में तना खडा हूँ।' राजनीतिक दलों की अवसरवादिता ने मुझे भीतर से छील दिया है। जिनसे मैं आशाएँ करता था वे जनता को चबाने में लगे हैं। मैंने तय कर लिया है कि सैद्धान्तिक बहसों में पड़ने की बजाय मुझे सच्चाई की तरफ आँख किये रहना चाहिए।''[6]

सर्वेश्वर की कविता जमीन से जुड़ी कविता है जो नये भाव–बोधों को जन्म देती है। सर्वेश्वर का प्रेम वायवी नहीं, अपितु धरती का प्रेम है। इसी प्रेम की खातिर वे आवाज देते हुए पुकारते हैं –

मैंने आवाज दी है कोई अभी आयेगा,
लाश को मेरी वही खींच के ले जायेगा।
जिन्दगी –भर किसी ने सुनी अनसुनी कर दी,
मौत के बाद भी क्या सुनके ही रह जायेगा।[7]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सर्वेश्वर का प्रथम काव्य–संग्रह काठ की घंटियाँ (1959) की कविताएँ कैशोर रोमांटिकता से संपृक्त हैं। रोमानी प्रेम और विशुद्ध प्रकृतिपरक कविताएँ इस संग्रह में खूब मौजूद हैं। इस संग्रह में कवि ने प्रकृति के सानिध्य में बैठकर प्रेम की चाहत व्यक्त की है। इस संग्रह की कविताओं में अल्हड़ भावुकता और अनुभूति एवं अभिव्यक्ति का (अपेक्षाकृत) कच्चापन दिखाई पड़ता है –

यह भी क्या रात कहीं प्यार का अफ़साना नहीं,
यों ही जलता है दिया एक भी परवाना नहीं,
एक तस्वीर–सी यह सारा का सारा आलम
इस तरह देखता है गोया कि पहचाना नहीं।[8]

सर्वेश्वर यथार्थ के धरातल पर ही रचनाएँ करते हैं। उन्होंने अपने काव्य में जीवन की यथार्थ–स्थिति को ही अभिव्यक्ति दी है। शायद यही कारण रहा होगा कि प्रेयसी की चम्पई पंखुड़ियों से होठों की चाह नहीं, बल्कि वे भद्दे दरारों वाले होठों में जीने की बात करते हैं–

मैं तुम्हारे लिपिस्टिक लगे होठों की
विकृत अरुणिमा में भी

पंख खोलकर तैर सकता हूँ,
यदि तुम थकावट के पाले में
झुलसकर गिरे हुए इस काफिले को
भोर की सुनहरी धूप की तरह
उठने की आवाज दो।
मैं तुम्हारे भद्दे होठों की
काली दरारों में भी जी सकता हूँ,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

यदि तुम थककर गिरे हुए
किसी चरण के घाव चूम लो
और हर दर्द को
सपनों की जयमाला पहना दो।[9]

सर्वेश्वर समष्टि और व्यष्टि दोनों ही फलक पर प्रेम के कवि हैं, प्रत्युत उनके प्रेम में व्यष्टि–चेतना अधिक मुखर है। उनके काव्य में व्यक्त प्रेम का रूमानीपन, स्मृति की सुगन्ध अहसासों की अभिव्यक्ति निस्सन्देह सम्मोहित करती है। उनके प्रेमिल हृदय की पुकार द्रष्टव्य है –

अहं से मेरे बड़ी हो तुम
क्योंकि मेरी शक्तियों की
हर पराजय–जीत की
अन्तिम कड़ी हो तुम।
जहाँ रूककर
फिर नयी मैं टेक गढ़ता हूँ,
भूमि पैरों के तले मेरे न हो फिर भी
हर नये संघर्ष के विष–श्रृंग चढ़ता हूँ,
क्योंकि अन्तर में
अतल गहरे –
आस्था के टूटते असहाय रथ के चक्र थामे
नित खड़ी हो तुम।
अहं से मेरे बड़ी हो तुम।[10]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रेम में मौन की अत्यंत सार्थक भूमिका है। सर्वेश्वर इस भूमिका से परिचित हैं। प्रेम में रूठना, मनाना, मनुहार करना अपेक्षित है। सर्वेश्वर इसे जानते हैं। व्यष्टिमूलक प्रेम में तन्मयता होती है, आत्मविसर्जन का भाव होता है। सर्वेश्वर की कविताओं में यह स्पष्ट देखा जा सकता है। प्रेम में उल्लास ही नहीं, अवसाद भी होता है। आशा–निराशा का द्वन्द्व प्रेम की परीक्षा लेता है। सर्वेश्वर का कथन है–

धन्य है तुम्हारा प्यार!
एक पीला सागर–
मौन, निश्चल, अलौकिक, अपार।
जिसमें मैं
एक भूरी किश्ती–सा डूब रहा हूँ।[11]

सर्वेश्वर का व्यष्टिमूलक प्रेम पत्नी या प्रेमिका तक सीमित नहीं है। उसमें भक्ति और वात्सल्य की तीव्रता भी है। अपनी पुत्री के लिए भी उन्होंने कतिपय कविताएँ लिखी हैं, जिनमें ममत्व का गहरा बोध है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है–

पेड़ों के झुनझुने
बजनें लगे;
लुढ़कती आ रही है
सूरज की लाल गेंद।
उठ मेरी बेटी, सुबह हो गयी।[12]

प्रेम में संयोग के क्षण अविस्मरणीय होते हैं। दुनिया सिमट जाती है और साँसों का सरगम स्वयं बजने लगता है। दुनिया के कोलाहल से दूर एक नयी दुनिया साकार होने लगती है, जो सिर्फ दो लोगों की होती है। सब कुछ अपने पास महसूस होने लगता है–

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

तुम्हारे साथ रहकर
अक्सर मुझे महसूस हुआ है
कि हर बात का एक मतलब होता है,
यहाँ तक कि घास के हिलने का भी,
हवा का खिड़की से आने का,
और धूप का दीवार पर
चढ़कर चले जाने का।[13]

निराशा के जल में ही आशा के कमल खिलते हैं। रात्रि के गहन अन्धकार के बाद ही प्रातः काल में आस्था का सूर्य उदित होता है। सर्वेश्वर के जीवन में अपनी माँ, पिता, बच्चे और पत्नी के देहावसान के बाद बीहड़ अकेलापन और गहन अवसाद उतर आता है। उन्हें जीवन और संसार खाली–खाली और सूना–सूना–सा लगने लगता है–

बायें हाथ में ले
अपना कटा हुआ दाहिना हाथ
बैठा हूँ मैं घर के उस कोने में
जिसे तुम्हारी मौत
कितनी सफाई से खाली कर गयी है।[14]

निष्कर्ष :–

निस्सन्देह सर्वेश्वर की प्रेम दृष्टि अत्यन्त व्यापक और गहरी है। उनकी कविताओं में प्रेम की विभिन्न भंगिमाओं का वर्णन सरलता और सजीवता के साथ हुआ है। उनके व्यष्टिमूलक और समष्टिमूलक प्रेम–वर्णन में गहरी आत्मीयता है, व्यापक सौन्दर्यबोध है, अद्भुत् तन्मयता है और अभिभूत करनेवाली अभिव्यंजना भी।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संदर्भ सूची

1. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' परिमल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं0 1997, पृ0– 49
2. सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, जंगल का दर्द, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहली आवृति 2000 पृ0– 80
3. लक्ष्मीकान्त वर्मा, नयी कविता के प्रतिमान, भारती प्रेस इलाहाबाद, पृ0– 66
4. डॉ0 देवराज, नयी कविता, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली सं0 1987, पृ0– 86
5. डॉ0 रामवचन राय, नयी कविता उद्‌भव और विकास, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना प्र0 सं0 1974, पृ0– 209
6. कृष्णदत्त पालीवाल, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, उद्धृत अन्तरंग साक्षात्कार, सचिन प्रकाशन नई दिल्ली प्र0 सं0 1988 पृ0– 70
7. संपादक वीरेन्द्र जैन, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ग्रंथावली भाग–1, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली प्र0 सं0 2004, पृ0– 17
8. वही पृ0 24
9. वही पृ0 39
10. वही पृ0 49
11. वही पृ0 161
12. वही पृ0 168
13. वही पृ0 238
14. वही पृ0 341